अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

अशरण संसार में धर्म ही है शरण: महातपस्वी महाश्रमण

-लगभग ग्यारह किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री पहुंचे कायमकुलम

-गवर्नमेंट वुमेन पॉलीटेक्निक कॉलेज परिसर में पहुंचे शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण

-आचार्यश्री ने लोगों को धर्ममय जीवन जीने की दी पावन प्रेरणा

10.03.2019 कायमकुलम, अलप्पुझा (केरल): इस दुनिया में शरण और अशरण की बात आती है। आदमी के लिए माता-पिता, परिजन, मित्र आदि कोई शरण नहीं बन सकता। आदमी जब बीमार हो जाए तो लोग उसे सहारा दे सकते हैं, इलाज भी करवा सकते हैं, किन्तु उसके दुःख को दूर नहीं कर सकते और कभी-कभी तो बीमारी भी लाइलाज हो जाती है और चिकित्सक भी जवाब दे देते हैं, उस समय कोई शरण देने वाला नहीं बन सकता। आदमी की जब मृत्यु आती है तो कोई भी उसको शरण देने वाला नहीं होता। कोई आदमी के बुढापा आने से भी नहीं रोक सकता। इस प्रकार कोई आदमी न किसी का शरण बन सकता है और न किसी के परिजन, मित्र आदि शरण बन सकते हैं। इस अशरण संसार में अर्हतों, सिद्धों, आचार्यों व केवली प्रज्ञप्त धर्म की शरण प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। धर्म मानव जाति के शरण देने वाला हो सकता है। इसलिए आदमी को धर्म की शरण में जाने का प्रयास करना चाहिए। उक्त ज्ञान की बातें जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अलप्पुझा जिले के कायमकुलम गांव में स्थित गवर्नमेंट वुमेन पॉलीटेक्निक कॉलेज परिसर में उपस्थित श्रद्धालुओं को बताईं।

रविवार को आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपनी अहिंसा यात्रा के साथ नंगिरकुलंगरा स्थित टी.के. माधव मेमोरियल कॉलेज परिसर से मंगल प्रस्थान किया। आज के विहार मार्ग में स्थित अनेक गांव के ग्रामीणों को आचार्यश्री के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का सुअवसर मिला। आचार्यश्री लगभग ग्यारह किलोमीटर का विहार कर कायमकुलम स्थित गवर्नमेंट वुमेन पॉलीटेक्निक कॉलेज में पधारे। रात में हल्की बरसात होन के बावजूद गर्मी और उमस में कोई कमी थी। कुछ समय बाद ही उपस्थित श्रद्धालुओं को अपनी अमृतवाणी से आच्छादित करने के लिए आचार्यश्री प्रवचन में पधारे।

उपस्थित श्रद्धालुओं को इस अशरण संसार में धर्म की शरण स्वीकार करने की पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आदमी को अहिंसा, संयम और तप के माध्यम से धर्ममय जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए। धर्म ही आदमी के लिए शरणभूत बन सकता है। आदमी धर्म की रक्षा करता है तो धर्म आदमी की रक्षा करता है। सिद्धों, अर्हतों और गुरुओं की शरण में जाने का प्रयास करना चाहिए। धर्माचार्य पथप्रदर्शक धर्म का मार्ग बताने वाले होते हैं, जिनके माध्यम से आदमी सत्पथ पर चलते हुए धर्म का अनुगमन करते हुए अपना कल्याण कर सकता है। उनके दिखाए मार्ग पर आदमी चलने का प्रयास करे। धर्म से पुण्य का बंध भी होता है। आदमी अपने जीवन में धर्म के शरण में रहते हुए अपने जीवन का कल्याण करने का प्रयास करना चाहिए।